This question paper contains 4 printed pages.

Roll No. ....

3102-I

B.A. (Part-III) Examination, 2024

(Regular)

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-III]

(Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न–पत्र

(आधुनिक काव्य)

Time Allowed: Three Hours **Maximum Marks: 100**

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – **(10×4=40)**

(क) दोनों ओर प्रेम पलता है।

सखि, पतंग भी जलता है हाँ! दीपक भी जलता है।

सीस हिलाकर दीपक कहता –

'बन्धु! वृथा ही तू क्यों दहता?

पर पतंग पड़ कर ही रहता!

कितनी विह्वलता है।

दोनों ओर प्रेम पलता है!

बचकर हाय पतंग करे क्या?

प्रणय छोड़कर प्राण धरे क्या?

जले नहीं तो मरा करे क्या?

क्या यह असफलता है?

दोनों ओर प्रेम पलता है।

[P.T.O.]

2. "जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तम्भ हैं।" इस कथन के आलोक में प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नदी के द्वीप' कविता का मूल भाव एवं कवि की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

3. 'गजानन माधव 'मुक्तिबोध' नयी कविता के प्रतिनिधि कवि हैं।' इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट करते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. नरेश मेहता की कृति 'संशय की एक रात' में प्रतिपादित मानवीय संवेदना और आधुनिक संदर्भों को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया है।' इस कथन को दृष्टिगत रखते हुए नरेश मेहता की कविता की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

5. भारतेन्दुयुगीन साहित्य की प्रमुख काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

प्रयोगवाद का क्या तात्पर्य है? प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

अथवा

कहाँ गए धनपति कुबेर वह
कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम प्रवाही गंगाजल का
ढूँढ़ा बहुत किंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

(घ) सम्भव है
हम भी
ऐसे ही दुर्भाग्यपूर्ण सौभाग्यी युग के चिन्तक हों।
लेकिन
अभी टूटे हुए व्यक्तित्व की जो बात
कही थी आपने
सार्थक लगी।
द्वन्द्व
मुझमें भी कहीं पर है,

अथवा

इनके बीच हम अपनी समस्याएँ लिए
भटके सार्थ के
टूटे हुए संदर्भ हैं।
मरुथलों की
गरम जलती हवाओं की भाँति
असत्कारित
अवांछित
हर गाछ से।

अथवा

घनीभूत हो उठे पवन, फिर श्वासों की गति होती रुद्ध,
और चेतना थी बिलखाती, दृष्टि विफल होती थी क्रुद्ध।
उस विराट आलोड़न में ग्रह, तारा बुद–बुद से लगते,
प्रखर–प्रलय पावस में जगमग, ज्योर्तिगणों से जगते।

(ख) वीरों का गढ़, वह कालिंजर,
सिंहों के लिए आत पिंजर;
नर हैं भीतर, बाहर किन्नर–गण गाते;
पीकर ज्यों प्राणों का आसव
देखा असुरों ने दैहिक दव,
बंधन में फँस आत्मा–बांधव दुःख पाते।

अथवा

द्वीप हैं हम! यह नहीं है शाप। यह अपनी नियती है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में।
वह बृहत भूखंड से हम को मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।
नदी तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो।

(ग) मैंने जब भी उनसे कहा कि देश शासन
और राशन..................
उन्होंने मुझे टोक दिया है।
अक्सर वे मुझे अपराध के असली
मुक़ाम पर
अँगुली रखने से मना करते हैं।
जिनका आधे से ज़्यादा शरीर
भेड़ियों ने खा लिया है
वे इस जंगल की सराहना करते हैं –
'भारतवर्ष नदियों का देश है।'
वेशक यह ख्याल ही उनका हत्यारा है।
यह दूसरी बात है कि इस बार उन्हें पानी ने मारा है।